IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पारम्परिक लोकगीत एवं संस्कार गीतों का सांगीतिक विश्लेषण तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव

(परम्परा एवं धरोहर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 बृजेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

पी0जी0 कालेज पट्टी

प्रतापगढ़ उ0प्र0

भूमिका

संगीत भारत की प्राचीन कला है और प्राचीन काल से ही संगीत का इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहा है। इस कला ने समय की प्रगति के साथ उत्तोरत्तर उन्नति की ओर सदैव अग्रसर रहा है।

आज भारतीय लोकगीतों एवं संस्कार गीतों का जो स्वरुप हमारे सम्मुख उपस्थित है वह एकाएक किसी खोज या बौद्धिक उपज द्वारा निर्माण नही हुआ बल्कि उसके मूल रुप में निरन्तर वृद्धि और परिवर्तन होते–होते ही उसका वर्तमान स्वरुप निश्चित हुआ है। प्रायः लोक गीत लोक के वे गीत होते है जिन्हें कोई एक ब्यक्ति नही बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है, सामान्यतः लोक में प्रचलित लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गये गीतों को लोक गीत कहा जा सकता है। एवं लोक गीतों का रचनाकार अपने ब्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज अभ्युिदुत करता है वही लोकगीत है। उदाहरण स्वरुप कजरी,सोहर,चैती,लंगुरिया आदि।

लोकगीतों का स्वरुप

लोकगीत एवं संस्कार गीत मनुष्य के स्वाभाविक भावात्मक स्पंदनों से जितना जुड़ा हुआ है उतना ही वाणी के किसी रुप में देखने को नही मिलता लोकगीत ही लोक जीवन की वास्तविक भावनाओं को प्रस्तुत करता है। इसमें मनुष्य मात्र के पारिवारिक और सामाजिक जीवन का सामयिक तथा भावनात्मक चित्रण मिलता है, जीवन के सभी पहलुओं एवं विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के मानसिक एवं शारीरिक व्यापार जैसे होते है। लोकगीत में सामूहिक चेतना की पुकार मिलती है इसमें जनता के जीवन का इतना विषद चित्रण होता है कि उनमें मूल

संस्कृति तथा जन जीवन का पूर्ण चित्रण मिलता है। और यही लोकगीत एवं संस्कार गीत हमारी मूल संस्कृति है जो हमें विरासत के रुप में मिली है। लोकगीत एवं संस्कार गीतों में जीवन के हर्ष–विषाद,आशा,निराशा,सुख–दुख सभी की अभिवक्ति होती है।

वर्तमान समय में लोकगीत एवं संस्कार गीतों का महत्व कम होता जा रहा है जबकि लोकगीत एवं संस्कार गीतों के शब्दों एवं लय ताल को देखा जाय तो मनोवैज्ञानिक रुप से आरामदायक होता है, प्रत्येक राज्य का अपना अलग–अलग लोकगीत एवं संस्कार गीत होते है और यही लोक गीत एवं संस्कार गीत ही उस राज्य की संस्कृति की पहचान होती है परन्तु वर्तमान समय में चकाचौंध की दुनिया में हम अपनी परम्परा को भूलते जा रहें है। आज वर्तमान समय में यह जरुरी हो गया है कि लोकसंगीत एवं संस्कार गीलों का सांगीतिक विश्लेषण किया जाय जिसमें लगने वाले स्वर,लय,ताल,छन्द की बारीकियों को समझा जाय तथा उससे होने वाले मनौवैज्ञानिक प्रभाव का अध्यन भी किया जाय, जैसे लोरी गाते ही बच्चे को नींद आ जाती थी तथा जॉत पीसते समय जॉत गीत गा कर कई किलों आटा–चावल की पिसाई भी करती थी परन्तु उनको किसी भी प्रकार की पीड़ा या कष्ट का अनुभव नही होता था। ऐसे इहुत सारे लोक संगीत एवं संकार गीत है जो समाज में आज भी प्रचिलित है परन्तु वर्तमान समय में चकाचौंध की दुनिया में लुप्त से होते जा रहें है। मेरा खुद का यह माानना है कि वर्तमान समय में जिस प्रकार कान पकाऊ संगीत तथा गन्दे गानों का प्रचलन बढ़ रहा है यदि समय रहते अपनी पुरानी धरोहर को न बचाया गया तो आने वाला समय भारतीय संगीत के लिए अत्यधि कष्टदायी होगा। प्रायः पुराने गीतों को देखने पर यह पता चलता है कि पुराने कवियों को संगीत की भी जानकारी थी और संगीत की बारीकियों को समझ कर ही कविताओं का लेखन करते थे और जब उन्हीं कविताओं को उन्हीं के अनुरुप बनाये गये लय,ताल,छन्द में वाचन करते है तो अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती है आज यह भी एक यक्ष प्रश्न है कि हमारे पारम्परिक लोकगीत एवं संस्कार गीतों में लगे ताल,छन्द को समझ सकें और इससे होने वाले मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्यन कर सकें।

लोकगीत समाज की धराहर ही नही बल्कि लोक जीवन का दर्पण भी है तथा लोकगीतों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह मिठास और संवेदना से भरा होता है, जिसे पढ़ने में जितना आनन्द नही मिलता उससे ज्यादा सुनने में मिलता है लोंकगीतों एवं संस्कार गीतों निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित कर अध्ययन किया जायेगा।

1. **संस्कार गीत –:** इसके अर्न्तगत सोहर, खेलावन, मुण्डन, जनेऊ, विवाह, कोहबर, बेटी विदाई, समुझावन, गौना आदि के गीतों का अध्यन।
2. **ऋतुगीत –:** इसके अर्न्तगत कजली, बारामासा, फगुआ, चैता आदि के गीतों का अध्यन।
3. **ब्यवसाय या श्रमगीत –:** इसके अर्न्तगत जतसार, रोपनी, कोल्हू, मल्लाह आदि के गीतों का अध्यन।
4. **पर्व एवं त्योहार के गीत –:** इसके अर्न्तगत छठ गीत, तीज, जितिया, करमा, बिहुला–बिसहरी आदि के गीतों का अध्यन।

5. **धार्मिक गीत –:** इसके अर्न्तगत शीतलामाता का गीत, प्रभाती, निर्गुण, भजन, ग्राम देवता आदि के गीतों का अध्यन।
6. **लीला गीत –:** इसके अर्न्तगत झूमर एवं झूलन गीतों का अध्यन।
7. **लोरी –:** ये नवजात शिशुओं के गीत है जिनके प्रभाव का अध्यन।
8. **बाल क्रीड़ा गीत –:** असके अर्न्तगत खेल गीतों का अध्यन किया जायेगा।

अतः इस प्रकार भारत के प्रत्येक राज्यों के अलग–अलग लोकगीत एवं संस्कार गीतों का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। परन्तु वर्तमान समय में केवल ग्रामीण परिवेश में ही सुनने को मिलता है और शहरी लोगों का नजरिया इसके प्रति सकारात्मक नही है इस प्रकार के गीत संगीत के गाने वालों को उचित सम्मान नही मिल पाता। इस लेख के माध्यम से शहर एवं ग्रामीण के बीच की खॉई को भरने की कोशिश की जायेगी।

रष्ट्रपिता महत्मा गॉधी जी ने कहा था कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते है, नदियॉ गाती है, फसलें गाती है उत्सव मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कठों में लोक समूह लोकगीत गाते है। स्व0 राम नरेश त्रिपाठी के शब्दों में जैसे कोई नदी किसी घोर अन्धकारमयी गुफा में से बाहर आती हो और किसी को उसके उद्‌गम का पता न हो ठीक यही दशा लोकगीतों के बारे में विद्वान मनुष्यों ने स्वीकारी है।

प्रायः सामाजिकता को जिन्दा रखने के लिए लोकगीतों तथा लोक संस्कृतियों को सुरक्षित रखना बहुत जरुरी है। कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नही होते, वहा पागलों की संख्या अधिक होती है। सदियों से दबे, कुचले समाज ने खासकर महिलाओं ने सामाजिक अपमान, घर परिवार के लोगों का ताना एवं जीवन संघर्षों से जुड़ी आपाधापी को अभिव्यक्ति देने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया। आज वैश्वीकरण के प्रचलन में हमने अपनी कलाओं को तहस–नहस कर दिया।

निष्कर्ष

भारतीय लोक संगीत प्रदर्शनात्मक कला होने के कारण इस लेख के माध्यम से संगीत के विद्यार्थियों एवं कलाकारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा लोक संगीत के क्षेत्र में अभिरुचि रखने वाले नई पीढ़ी के विद्यार्थियों एवं कलाकारों को लोक संगीत के क्षेत्र में आकर्षक कैरियर बनाने में प्रोत्साहित करेगा साथ ही हमारे पारम्परिक गीतों एवं संगीत की बारीकियों को समझ कर वर्तमान समय में गन्दे गानों के प्रचलन से बच सकेंगें तथा आने वाला समय संस्कारयुक्त गीत संगीत का होगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :–

1. मलिक डॉ0 भीम सिंह, लोकगीत का सांस्कृतिक मूल्यांकन।
2. शर्मा डॉ0 श्री राम, लोक साहित्य, सिद्धान्त एवं प्रयोग।
3. अनिल, संतराम, कन्नौजी लोकगीत।
4. शर्मा डॉ0 पूरणचन्द्र, लोक संस्कृति के क्षितिज।
5- सिंह करनपाल, पूर्वाचल के लोकसंगीत।